बेहतर समाज में पूर्वापेक्षा नैतिक मूल्यों का उन्नयन आवश्यक है। इसलिए साहित्य में सामान्य सत्य का सन्निवेश होना चाहिए। साहित्य में 'सामान्यता' से उसका तात्पर्य सामान्य मानव प्रकृति के चित्रण से था। कवि को मानव-प्रकृति की समझ होनी चाहिए। सामान्य मानव-प्रकृति के चित्रण से ही कविता दीर्घकाल तक अधिक से अधिक पाठकों को प्रभावित कर सकती है।

डॉ० जानसन का आलोचक रूप उनके द्वारा संपादित अंग्रेजी शब्द-कोश की भूमिका, कवियों की जीवनियों में उनके वैशिष्ट्य के उद्घाटन, शेक्सपीयर के नाटकों की भूमिका तथा 'रैम्बलर' (Rambler) में लिखे गए उनके स्फुट समीक्षात्मक निबन्धों पर आधृत है। उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य कवियों की समीक्षात्मक जीवनियाँ है। यह अंग्रेजी साहित्य में जीवनीपरक समीक्षा की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इस कृति में भी संभवतः सर्वोत्तम जीवनी मिल्टन (Milton) की है। मिल्टन, डॉ० जानसन का आदर्श कवि है। उसकी समीक्षा करते हुए डॉ० जानसन ने कविता की जो परिभाषा दी है, वह ध्यान देने योग्य है। उनकी दृष्टि में "कविता एक ऐसी कला है जिसमें कवि का विवेक कल्पना की सहायता से सत्य को आनन्ददायी बनाकर प्रस्तुत करता है।"[1] उपर्युक्त परिभाषा में वे सारे तत्त्व समाहित हैं जिन्हें जानसन कविता में आवश्यक मानते हैं। कविता 'एक कला' है। इसमें कवि का विवेक कल्पना के सहारे क्रियाशील होता है। अर्थात् इसमें विवेक और कल्पना दोनों का होना अनिवार्य है। कविता अन्ततः सत्य को ही व्यक्त करती है। किन्तु यह अभिव्यक्ति आनन्दप्रद होती है। इस परिभाषा में सत्य, विवेक, और कला ये तीन तत्त्व शास्त्रवाद और नवशास्त्रवाद के पोषक हैं। इसके साथ कल्पना और आनन्द ये दो तत्त्व स्वच्छन्दतावाद की ओर इशारा कर रहे हैं। निश्चय ही जानसन एक नवशास्त्रवादी समीक्षक है किन्तु वह नितान्त अतीतजीवी भी नहीं है। उसका व्यापक अध्ययन आदर्शवादी प्रकृति एवं गंभीर व्यक्तित्व उसे शास्त्रवाद समर्थक बनाते हैं तो समय की धड़कनों को पहचानने की उसकी सहज प्रज्ञा एवं मर्मग्रहिता उसे नये युग की पद-चाप सुनने को विवश करते हैं। इसलिए उसे मर्यादित नवशास्त्रवादी कहना सर्वथा उचित है।

स्वच्छन्दतावाद

अठारहवीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते यूरोप का मानसिक क्षितिज बहुत कुछ बदल चुका था। नवजागरण के क्रमिक विकास की परिणति स्वरूप जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का आलोक फैल चुका था। अनेक प्रकार के वैज्ञानिक आविष्कार हो चुके थे। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्तन कर दिया था। सामन्तशाही पृष्ठभूमि में चली गई थी। मध्यवर्ग का उदय हो चुका था। पूँजीवादी व्यवस्था अपनी जड़ें जमा रही थी। स्वतंत्रता और समानता के मूल्य उभरकर सामने आ गए थे। फ्रांस की राज्य-क्रांति ने स्वतंत्र-चिन्तन

1. *"Poetry is the art of uniting pleasure with truth, by calling imagination to the help of reason."*
- History and Principle of Literary Critism- By Dr. Raghukul Tilak, Page 200

Scanned by CamScanner

र्ग प्रशस्त कर दिया था। एक नये तरह के सौन्दर्यशास्त्र के सृजन की पृष्ठभूमि बन चुकी । जर्मनी में 'लेसिंग' (Lessing 1729-81 ई०) 'हर्डर' (Herder - 1744 - 1803) और 'गोइथे' (1749-1832 ई०) जैसे कवि और नाटककार परंपरा को चुनौती देते नये काव्य-मूल्यों की प्रतिष्ठा के अग्रदूत के रूप में मान्य हो रहे थे। काण्ट (Kant 1724-04 ई०) के चित्वादी दर्शन ने नवीन काव्य-मूल्यों को सशक्त वैचारिक आधार प्रदान किया । जो प्रत्यक्ष है, सीमित है, स्थूल है, नियमबद्ध है उससे परे रहस्यमय विराट् और असीम ति जिज्ञासा का भाव सभी क्षेत्रों में जागृत हुआ। रूसो (1712-1778 ई०) ने मानव-स्वभाव विश्लेषण करते हुए विवेक के स्थान पर अन्तःकरण (Conscience) को अधिक महत्व ा। शास्त्रवादी विचारक विवेक और बुद्धि को अत्यधिक महत्व देते थे। विवेक ही उन नियमों सृष्टि करता है जिनका पालन करके मनुष्य समाज में अपने को नैतिक प्रमाणित करता रूसो की दृष्टि में मनुष्य की अन्तरात्मा स्वतः सद्वृत्तियों को चालित करती है। बाहर से द्वारा थोपे हुए अनुशासन की तुलना में मनुष्य अपनी अन्तरात्मा से प्रेरित होकर अधिक क हो सकता है। रूसो की यह मान्यता नवीन रोमैण्टिक काव्य-मूल्यों के विकास में सहायक हुई। अठारहवीं शताब्दी के अंतिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथमचरण के बीच ैण्ड में वर्ड्सवर्थ (1770-1850 ई०), कीट्स (Keats 1795 - 1821 ई०), शेली Shelly 1792-1822 ई०), बायरन (Byron 1788-1824 ई०) और कोलरिज Coleridge 1772-1834 ई०) जैसे अत्यन्त प्रतिभा-सम्पन्न कवियों का आविर्भाव हुआ। कवियों ने परंपरागत शास्त्रीय मान्यताओं की नकार कर नये काव्य-मूल्यों को महत्व दिया। -पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली समीक्षाओं में पारंपरिक मूल्यों और आग्रहों के प्रति विरोध भाव प्रकट होने लगा। सन् १७९८ में विलियम वर्ड्सवर्थ का 'लिरिक्ल वैलेड्स' (Lyrical allads) प्रकाशित हुआ। १८०० ई० में इसके दूसरे संस्करण में उन्होंने परंपरा से हटकर पनी नवीन मान्यताओं की स्थापना की। उन्होंने कहा कि सभी अच्छी कवितायें "प्रबल भावावेग सहज, स्वैच्छिक, अदम्य अभिव्यक्ति हैं।"[1] उनकी यह परिभाषा पारंपरिक शास्त्रीय मान्यताओं अलग नवीन स्वच्छन्द काव्यमूल्यों का आधार मानी जाती है। वर्ड्सवर्थ के पूर्व डॉ० जानसन समय तक यूरोप में काव्यशास्त्र का ही बोलबाला था। नव्यशास्त्रवादी पारंपरिक काव्य-रूढ़ियाँ पालन, प्रकृति के अनुकरण, कविता की शुद्धता, उसके उपदेशात्मक स्वरूप की रक्षा, तथा षा और शैली के कलात्मक संयोजन पर अधिक बल देते थे। वर्ड्सवर्थ ने "काव्य के वहिरंग की अपेक्षा अंतरंग की महत्व-प्रतिष्ठा कर, शैली की परिशुद्धता और अलंकृति के स्थान पर ात्मा की अन्तःस्फूर्ति और उससे प्रेरित भावों के सहज उच्छलन पर बल देकर, स्वच्छदतावादी आलोचना का प्रवर्तन किया। इस दृष्टि से मूलतः आलोचक न होने पर भी पाश्चात्य आलोचनाशास्त्र में उनकी मान्यताओं का गौरव अक्षुण्ण है।"[2]

Scanned by CamScanner

है। चूँकि महान् कृतियों की गुणवत्ता का प्रतिमान ग्रीस और रोम की शास्त्रीयतावादी रचनाएँ ही थीं इसलिए ग्रीस और रोम की शास्त्रीयतावादी रचनाओं की विशेषताओं से अनुप्राणित रचनाओं को क्लेसिकल कहने की परंपरा चल पड़ी। इंग्लैण्ड मे सत्रहवीं शती के अंतिम चरण से अठारहवीं शती के मध्य तक के साहित्य को अर्थात् ड्राइडेन, पोप और एडिसन के समय के साहित्य को, आगस्टन-युग का साहित्य इसीलिए कहा गया कि उसमें रोम के सम्राट आगस्टस (२७ ई०पू० से १४ ई० तक) के समय में होने वाले महान् साहित्यकारों 'वर्जिल' (Virgil), होरेस (Horace), ओविड (Ovid) और टिबुलस (Tibullus) की श्रेष्ठ रचनाओं के गुणों का अनुकरण किया गया था।

'नवशास्त्रीयतावाद' भी शास्त्रीयतावाद ही है। नवशास्त्रीयतावादियों – ड्राइडेन, पोप, स्विफ्ट, एडिसन और जानसन – ने भी प्राचीन ग्रीस और रोम के शास्त्रीय साहित्य को ही पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया था। दोनों में अन्तर यह है कि नवशास्त्रीयतावादियों ने अपने युग की सीमाओं के आलोक में प्राचीन ग्रीक शास्त्रीयतावाद को परिभाषित किया है। मुख्यतः वे होरेस (Horace) से प्रभावित थे। उन्होंने होरेस से प्रेरणा लेकर काव्य के सम्बन्ध में यह धारणा बनाई थी कि काव्य में उपदेशात्मकता के साथ ही आनन्ददायिनी शक्ति भी होती है। मनुष्य उनकी दृष्टि में एक ऐसा प्राणी था जिसके कार्य-व्यापार उसकी आन्तरिक प्रकृति और उस समाज के द्वारा नियंत्रित होते हैं, जिसका वह अंग होता है। उनकी दृष्टि में काव्य में कलात्मकता आवश्यक थी तथा स्वच्छन्द एवं रम्य कल्पना पर बुद्धि एवं विवेक का शासन लाजिमी था। वे पारंपरिक मूल्यों में विश्वास करते थे और प्रत्येक स्थिति में शालीनता एवं श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। नवशास्त्रीयतावादी संरक्षणशील प्रवृत्ति के कत्तई नहीं थे। यद्यपि वे पारंपरिक एवं आदर्श-प्रतीकों को संस्थापित करना चाहते थे किन्तु वे नवीन एवं विशिष्ट को भी स्वीकार करते थे और नये अनुसंधानों एवं रम्य कल्पनाओं को भी महत्व देते थे।[1]

स्वच्छन्दतावाद यूरोप में एक आन्दोलन के रूप में उभरा था। फ्रांस की राजनीतिक एवं औद्योगिक क्रांति (1789 ई०) से इसे प्रेरणा और शक्ति मिली। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक आते-आते यह पूरे यूरोप में फैल गया। वस्तुतः सौन्दर्य को मूर्त करने की आकांक्षा किसी भी रचनाकार की मूल प्रवृत्ति होती है। अन्वेषण एवं अनुसंधान के युग में जगत् के रहस्यों के प्रति कवियों में जिज्ञासा का भाव जगना स्वाभाविक है। जिज्ञासा के जगने से सौन्दर्य के साथ अद्भुत का मेल हुआ और इन दोनों प्रवृत्तियों ने कला में स्वच्छन्दता को जन्म दिया। कवियों ने परंपरा से हटकर नवीन विषयों एवं नवीन शैली-रूपों को लेकर नये-नये

Despite all this the Neoclassicists were not conservative in any pejorative sense. Though they were inclined to settle for the trditional and the typical, they were ready to accept the novel and the particular and they were much concerned with the importance of invention, and fancy and imagination.

— A Dict...

Scanned by CamScanner

लिए। स्वच्छन्दतावाद किसी भी वाह्य या आरोपित नियमों में बँधना नहीं चाहता। वह
ा चाहता कि अच्छी कविता के कुछ सूत्र पहले से तय कर लिए जायँ और फिर उन्हें ध्
में रखकर कविता की जाय। वह आन्तरिक अनुभूति को विशेष महत्व देता है, स्वच्छन्द
ना में विश्वास करता है और मनुष्य की स्वतंत्रता का हिमायती है। 'स्वच्छन्दतावाद' की
विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(क) आन्तरिक भावावेग पर बल- स्वच्छन्दतावाद रचना के लिए वाह्य प्रेरणा के स्थान
आन्तरिक भावावेगों की अभिव्यक्ति को विशेष महत्व देता है।

(ख) कल्पना-व्यापार का महत्व- स्वच्छन्दतावाद काव्य में कल्पना-व्यापार को सर्वाधिक
व देता है। आन्तरिक भावों को उत्कर्ष और विस्तार देने के लिए स्वच्छन्द कल्पनाशक्ति
होना अनिवार्य है। कवि-कल्पना के द्वारा ही नये-नये रूप-विधान करके भावों को उत्कर्ष
है; उनमें रहस्य और रोमांच के तत्त्वों का समावेश करता है और पाठकों के कुतूहल की
करके उन्हें आनन्द प्रदान करता है।

(ग) सौन्दर्य एवं रहस्य-प्रियता- स्वच्छन्दतावाद नैतिक बन्धनों को अस्वीकार करके
' के स्थान पर 'सुन्दर' की प्रतिष्ठा करता है। उसकी प्रवृत्ति नित्यप्रति के परिचित जीवन
धिक रहस्य एवं रोमाञ्च पूर्ण जीवन मे होती है।

(घ) तर्क एवं विवेक की अपेक्षा संवेदनशीलता को महत्व- स्वच्छन्दतावाद चीजों को
की कसौटी पर कसकर और नाप-तोल कर नहीं देखता। वह संवेदनशीलता को महत्व
है। उसकी दृष्टि में मनुष्य यन्त्र का पुतला नहीं है। वह एक संवेदनशील प्राणी है। कविता
के इस पक्ष की रक्षा करती है और उसे यंत्र बनने से बचाती है।

(ङ) सहजता एवं स्वतःस्फूर्तता का महत्व- स्वच्छन्दतावाद प्रयत्नसाध्य कला-कौशल
अपेक्षा सहज एवं स्वतःस्फूर्त उद्भावना के सौन्दर्य को महत्व देता है। उसकी दृष्टि में कविता
-साध्य शब्द-कौशल नहीं है। वह आत्म-प्रेरित भावाभिव्यक्ति है। उसमें किसी प्रकार की बनावट
होनी चाहिए।

(च) उपयोगितावाद के स्थान पर आनन्दवाद की प्रतिष्ठा- स्वच्छन्दतावाद कविता
स्थूल उपयोगितावाद से जोड़ कर नहीं देखता। कविता एक मानसिक व्यापार है। वह एक
ल्पनिक सृष्टि है। वह पाठक की कल्पना को जागृत करके उसे रहस्य-रोमाञ्च के अपरिचित
लोक में ले जाकर आनन्दमग्न करती है। इसलिए उसको उपयोगिता की स्थूल कसौटी पर नहीं
रखना चाहिए।

(छ) व्यक्ति-स्वातंत्र्य पर बल- स्वच्छन्दतावाद मनुष्य की सहज एवं स्वाभाविक अच्छाई
में विश्वास करता है। उसकी धारणा है कि सभ्यता के उपादान मनुष्य को क्रमशः भ्रष्ट करते
जा रहे हैं। मनुष्य अपने प्रकृत रूप में भला है। उसकी स्वतंत्रता की रक्षा होनी चाहिए। वस्तुतः

Scanned by CamScanner

स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन पर रूसो के विचारों का गहरा प्रभाव था। रूसो का मानना था कि "स्वतंत्रता मानव का परम आन्तरिक तत्त्व है। स्वतंत्रता मानवता का प्राण है जिसके अपहरण का अर्थ है- मानवता का विलोप होना। स्वतंत्रता ही नैतिकता का आधार है। स्वतंत्रभाव से काम करने पर ही उत्तरदायित्व अभिव्यक्त होता है।" रूसो की स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता का पर्याय नहीं है। वह सामान्य हित की दृष्टि से बनाए गए सामाजिक नियमों के पालन का हिमायती था। उसकी दृष्टि से स्वतंत्रता मनुष्य के नैतिक गुणों का स्रोत है। इसलिए उसकी रक्षा होनी चाहिए। स्वच्छन्दतावादी कला-आन्दोलन रूसो के इन विचारों से बहुत दूर तक प्रभावित था।

(ज) मानवतावादी जीवन-दृष्टि- स्वच्छन्दतावाद मनुष्य को उसके सहज प्राकृतिक रूप में पूर्ण मानता है। यह जीवन-दृष्टि भी रूसो की ही देन थी। रूसो ने ही दृढ़तापूर्वक यह प्रतिपादित किया था कि मनुष्य को मनुष्य के रुप में महत्व दिया जाना चाहिए। उसने स्वतंत्रता, समता और सहिष्णुता पर विशेष बल दिया था। ये तीनों ही गुण मनुष्य को महिमा-मंडित करने वाले हैं। स्वच्छन्दतावादी कवियों ने भी मनुष्य को महिमा-मंडित करके प्रस्तुत किया है। स्वच्छन्दतावादी कवियों ने पीड़ित मानवता के प्रति व्यापक और गहरी संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने उदात्त भावों को महत्व देकर मनुष्य की संभावनाओं को असीम बना दिया। इस प्रकार स्वच्छन्दतावादी काव्य-दृष्टि ने प्रकारान्तर से मानवतावाद की प्रतिष्ठा की।

(झ) सहज और अकृत्रिम भाषा-शैली- स्वच्छन्दतावाद ने भाषा और शैली की कृत्रिमता का विरोध किया। उसने पारंपरिक छन्दों के बन्धन को अस्वीकार कर दिया। वस्तुतः उसे किसी भी स्तर पर पारंपरिक बंधन स्वीकार्य नहीं थे। जब कवि की मूल प्रेरणा उसकी स्वाधीन चेतना है तो उसकी भावाभिव्यक्ति सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए। वाणी का सौन्दर्य उसके मुक्त प्रवाह में है। यदि किसी में नैसर्गिक सौन्दर्य नहीं है तो उसे अलंकारों से लादकर सुन्दर नहीं बनाया जा सकता। इसी प्रकार यदि कवि की वाणी में सहज अनुभूति-दीप्त लयात्मक संगीतमय भाषा-प्रवाह नहीं है तो उसे प्रयत्नपूर्वक पारंपरिक अलंकारों से बोझिल करके सुन्दर नहीं बनाया जा सकता।

(ञ) उत्कट प्रकृति प्रेम- स्वच्छन्दतावाद की एक बहुत बड़ी विशेषता प्रकृति के प्रति उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति थी। प्रकृति उसके लिए जड़ सत्ता नहीं थी। वह उसमें चेतन व्यक्तित्व की झलक पाता था। प्रकृति के कार्य-कलापों में वह किसी अव्यक्त रहस्यमयी सत्ता के संकेत का अनुभव करता था। प्रकृति का मानवीकरण स्वच्छन्दतावादी काव्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति थी। वस्तुतः रूसो ने वैज्ञानिक सभ्यता के यांत्रिक दबाव से बचने के लिए पुनः प्रकृति की गोद में जाने का आह्वान किया था। उसके विचारों से प्रभावित स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा में प्रकृति और मनुष्य के संश्लिष्ट सम्बन्धों की अभिव्यक्ति स्वाभाविक थी।

स्वच्छन्दतावाद की उपर्युक्त सभी विशेषतायें किसी एक कवि में मिलती हों, यह आवश्यक नहीं है। उसके वृत्त में आने वाले सभी कवियों की विशेषताओं को एक साथ लक्षित करने पर हम निश्चित रूप से उपर्युक्त काव्यधारा का सामान्य स्वरूप निर्दिष्ट कर सकते हैं।

Scanned by CamScanner